H.W. 4/11/21

odm connect homework

Date
Page 34

एक फूल की चाह

पाठ का सारांश :-

'एक फूल की चाह' कविता छुआछूत की समस्या पर केंद्रित है। महामारी के दौरान एक अछूत बालिका, सुखिया उसकी चपेट में आ जाती है। वह अपने जीवन की अंतिम साँसे ले रही है, वह अपने पिता से कहती है कि वे उसे देवी के प्रसाद का एक फूल लाकर दें। पिता असमंजस में है कि वह मंदिर में कैसे जाए। मंदिर के पुजारी उसे अछूत समझते हैं और मंदिर में प्रवेश के योग्य नहीं समझते। फिर भी बच्ची का पिता अपनी बच्ची की अंतिम इच्छा पूरी करने के लिए मंदिर में जाता है, वह दीप और पुष्प अर्पित करता है और फूल लेकर लौटने लगता है, बच्ची के पास जाने की जल्दी में वह पुजारी से प्रसाद लेना भूल जाता है, इससे लोग उसे पहचान जाते हैं, वे उस पर आरोप लगाते हैं कि उसने वर्षों से बनाई हुई मंदिर की पवित्रता नष्ट कर दी। वह कहता है कि उनकी देवी की महिमा के सामने उनका कलुष कुछ भी नहीं है, परंतु मंदिर के पुजारी तथा अन्य लोग उसे थप्पड़-मुक्कों से पीट-पीटकर बाहर कर देते हैं। इसी मार-पीट में देवी का फूल भी उसके हाथों से छूट जाता है, भक्तजन उसे न्यायालय ले जाते हैं। न्यायालय उसे सात दिन की सज़ा सुनाता है। सात दिन के बाद वह बाहर आता है, तब उसे अपनी बेटी की जगह उसकी राख मिलती है।

इस प्रकार वह बेचारा अछूत होने के कारण अपनी मरणासन्न बेटी की अंतिम इच्छा पूरी नहीं कर पाता। इस मार्मिक प्रसंग को उठाकर कवि पाठकों को यह कहना चाहता है कि छुआछूत की कुप्रथा मानव-जाति पर कलंक है। यह मानवता के प्रति अपराध है।